सागर के संत निर्भयसागर

(आचार्य श्री निर्भयसागर महाराज की जीवनी)

(प्रथम-पुष्प)

संकलन

मुनि श्री शिवदत्तसागर

मुनि श्री हर्षदत्तसागर

प्रकाशक

जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली

16/873, ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग,
नई दिल्ली, पफोनः (011) 23618426, मो. 9871078971

OK

कृति : **सागर के संत निर्भयसागर**

शुभाशीष : प. पू. आचार्य श्री अभिनंदनसागर जी
प. पू. आचार्य श्री विपुल सागर जी

संकलन : मुनि श्री शिवदत्तसागर जी

संकलन सहयोगी : समाधिस्थ मुनि हर्षदत्त सागर जी
(हुकुमचंद जी धबौली वाले सागर)
सुधा दीदी बंडा (सागर)

लेखन : बा. ब्र. लबली दीदी बरहन (आगरा)

कंपोजिंग : सौरभ जैन, हनुमानगंज, फिरोजाबाद

प्रकाशक : जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली

मूल्य : सौ रुपये

संस्करण : त्रितीय संस्करण सितम्बर 2025

प्राप्ति स्थान : डा. मिथलेश कुमार जैन
1087/9 मारवाड़ी, रामसुमेर बाबा नगर, कावड़ा पेठ
तुलसीनगर, नागपुर (महाराष्ट्र) 440002
मो. 9271278878

: सुनील कुमार जैन
जैन ब्रदर्स, 16/873, ईस्ट पार्क रोड, करोलबाग, नई दिल्ली
मो. 9871078971

: सिंघई पवन कुमार C/o पवन मेडीकल स्टोर, 37 अबंतिबाई
मार्केट, मकरोनिया, सागर (म.प्र.) मो. 9425452366
07582-260444

: अबनि बुक हाउस
L-B-12, मानसरोवर कॉम्लेक्स,
हबीबगंज रेलवे स्टेशन के पास भोपाल
मो. 9893903835

OK

आद्यवक्तव्य

परम पूज्य वीतरागी संत आचार्य गुरुवर श्री निर्भय सागर जी महाराज ने मुझे संसार रुपी गर्त से निकालकर रत्नत्रय के कमलासन पर बैठाया है और मोक्षमार्ग में बढ़ने के लिए चरण और आचरण दिये हैं, इसलिए हम गुरुदेव के ऋणी हैं। इस ऋण को हम विनय-भक्ति और गुरु आज्ञा से ही कुछ अंशों में चुका सकते हैं, इसलिए विनय-भक्ति में गुरुदेव के जीवन वृत्तान्त को संकलित करने का प्रयास किया है।

जीवन वृत्त लिखने की दो विधाएँ हैं। एक स्वयं आत्म-कथा के रुप में लिखने की विधा और दूसरी विधा दूसरों के द्वारा संकलित करके लिखने की। दोनों विधाओं में अपनी जीवन गाथा स्वयं आत्म कथा के रुप में लिखना सर्वश्रेष्ठ विधा हैं, क्योंकि अपने जीवन के बारे में जो स्वयं जितना अधिक जानता है उतना दूसरा नहीं जान सकता है। दूसरों के द्वारा देखा सुना ही लिखा जा सकता है, परन्तु स्वयं के द्वारा अनुभूत एवं मनोगत भाव को भी लिखा जा सकता है। कई विद्वानों ने अपना जीवन वृत्तान्त लिखा है जैसे गणेश प्रसाद वर्णी जी ने ''मेरी जीवन गाथा'', श्वेताम्बर आचार्य तुलसी ने ''मेरा जीवन मेरा दर्शन'' और महात्मा गाँधी आदि ने भी अपनी जीवनी लिखी है। परम पूज्य आचार्य श्री से मैनें कहा- आप अपनी जीवनी के बारे में कुछ लिखें परन्तु उन्होंने कहा कि आप ही संकलित करें हम आपका सहयोग कर देंगें और दूसरों से भी करा देंगे।

फिर हुआ यही कि परम पूज्य आचार्य गुरुवर निर्भय सागर जी महाराज के जीवन वृत्तान्त को संकलित कराने में गुरुदेव के गृहस्थ जीवन के माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-चाची, मित्रों एवं सम्बंधीजनों का विशेष सहयोग मिला, इसके साथ ही पूज्य आचार्य श्री का सर्वाधिक सहयोग आशीर्वाद के रुप में मिला। गुरु के पास रहकर समय-समय पर संस्मरण के रुप में सदा संकलन करता रहा एवं मार्गदर्शन भी लेता रहा। इसके संकलन का कार्य सन् 2010 में हुए अवागढ़ के चातुर्मास के बाद से प्रारम्भ किया। इसके पहले मैं गुरुदेव को नहीं जानता था। इसलिए यह कार्य अत्यधिक कठिन था, परन्तु गुरुदेव के आशीर्वाद रुपी ऊर्जा से ही कठिन कार्य भी सरल हो गया।

इस संकलन के शब्द संयोजन अर्थात लेखन के कार्य में बा. ब्र. लबली दीदी बरहन जि. आगरा एवं आचार्य श्री के गृहस्थ जीवन की बड़ी बहन सुधा, बण्डा, भाँजी डॉली जैन सागर एवं पिता श्री सवाई सिंघई हुकम चंदजी (समाधिस्थ मुनिश्री हर्षदत्त सागर जी) का अकल्पनीय सहयोग मिला। संकलन के उपरांत कई लोगों ने अलग-अलग इसके नाम सुझाये जैसे-अभय की निर्भय यात्रा, बुंदेलखण्ड के राजहंस, एवं बुंदेलखण्ड के निर्भय संत आदि परन्तु अंत में **''सागर के संत निर्भयसागर''** नाम देकर इस कृति को प्रकाशित किया गया।

इस संकलन से आचार्य श्री के व्यक्तित्व, कृतित्त्व एवं जीवन दर्शन को अच्छी तरह से जाना जा सकता है इसे तैयार करने में लगभग 5 वर्ष लगें। सन् 2010 से इसके संकलन एवं लेखन का कार्य प्रारम्भ किया गया था, जो सन 2016 मे प्रकाशन के योग्य बन पाया। इसमें भी अभी आधा अधूरापन है और यह प्रथम पुष्प के रुप में जन्म से लेकर क्षुल्लक दीक्षा तक एवं क्षुल्लक दीक्षा से लेकर संयम के रजत जयंती वर्ष तक ही संकलित करके प्रकाशित किया गया। द्वितीय पुष्प का कार्य निरंतर जारी है जो आगे प्रकाशित किया जायेगा। इसका प्रकाशन निर्भयवाणी प्रकाशन नागपुर से एवं प्रिंटिंग का कार्य जैन ब्रदर्स दिल्ली से हुआ।

अंत में परम उपकारी गुरुदेव के चरणों में शत्-शत् नमोस्तु, समस्त सहयोगी भक्तों के लिए आशीर्वाद एवं गुरु की कृति, गुरु के ही कर कमलों में समर्पित करते हुए मैं अपने आप को सौभाग्यशाली समझ रहा हूँ कि इस कार्य को करने का आशीर्वाद मिला। मुझे विश्वास है कि इस महनीय कृति से आबाल-वृद्ध और प्रबुद्ध जन लाभान्वित होंगे।

परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री के जीवन परिचय की इस संकलित जीवंत कृति में यदि त्रुटियाँ रह गई हों तो सुधि पाठक एवं विद्वतजन मुझे अवगत करायें जिससे अगले संस्करण में सुधारा एवं पूर्ण किया जा सके। सभी सुधी पाठक जन इस कृति का अवलोकन करें, प्रेरक प्रसंगों से प्रेरणा लेकर संयम पथ पर आगे बढ़ें। अंत में गुरुदेव के चरण-कमलों में त्रिकाल नमोस्तु.....

मुनि शिवदत्त सागर महाराज

(शिष्य पूज्य वैज्ञानिक संत आचार्य श्री निर्भय सागर जी महाराज)

OK

यथानाम-तथागुण

कभी-कभी तीक्ष्ण गर्मी उपरांत अकस्मात् वर्षा होने पर शीतलता का अनुभव हो जाता है। इसी प्रकार मैं तीक्ष्णता का अनुभव कर रहा था कि अकस्मात् परम पूज्य वीतरागी वैज्ञानिक संत आचार्य रत्न 108 श्री निर्भयसागर जी महाराज के दर्शन हुए। दर्शन के उपरान्त मैंने ''आनंद कही अनकही एवं भक्ति की शक्ति'' ये दो कृतियाँ आचार्य श्री को भेंट की।

प्रथम दर्शन एवं परिचय से इतनी आत्मीयता एवं शुभाशीष मिला कि मैं दूसरे दिन पुनः संत के चरणों में पहुँचा। इतने समय के अंतराल में पूज्य आचार्य श्री के आशीर्वाद के साथ ''सागर के संत निर्भयसागर'' की एक उत्तर प्रतिलिपि (फोटोकापी) प्रूफ रीडिंग हेतु सोंप दी।

मैंने यथाशीघ्र एवं यथा शक्ति त्रुटियाँ दूर कीं एवं मैंने भोपाल से सागर जाकर वह प्रति सौंप दी जब मैंने पांडुलिपी का पूर्ण अध्ययन किया तब ज्ञात हुआ कि आचार्य श्री ने बाल्यावस्था से ही सुसंस्कार प्राप्त किये हैं, लौकिक अध्ययन भी सर्वांगीण किया है, फिर जैनेश्वरी दीक्षा लेकर जैनागम का गहन अध्ययन किया एवं शिक्षण शिवरों, प्रवचनों एवं पाठशालाओं का शुभारंभ करके हजारों बालक-बालिकाओं एवं श्रावक-श्राविकाओं को ज्ञानार्जन कराकर सदमार्ग पर लगाने का अद्वितीय कार्य किया है।

आपने सम्यक् तप, ज्ञान, चिंतन और साधना करके वैज्ञानिक तथ्यों से परिपूर्ण अनेक कृतियों का साहित्यिक सृजन किया है। जिससे हजारों ज्ञान पिपासुओं की अज्ञानता व भ्रांतियों दूर हुई और उन्हें सम्यक् ज्ञान का प्रकाश मिल रहा है।

आपकी सहज, सरल, तार्किक, ओजस्वी वाणी से लाखों जैनेतर प्रभावित हुए एवं उन्होंने जैन धर्म के गूढ़ रहस्यों को समझा। आपका नाम श्री निर्भयसागर वास्तव में निर्भयता को सार्थक करता है और बुंदेलखण्ड की हृदय स्थली सागर की भूमि में जन्मे आप अद्वितीय संत हैं। इसलिए **''सागर के संत निर्भयसागर''** इस नाम से आपकी जीवनगाथा प्रकाशित होकर कृति के नाम को सार्थक कर रही है। प्रस्तुत कृति मानव समाज के लिए पठनीय व अनुकरणीय है। अतः मैं पूज्य आचार्य श्री के चरण कमलों में शत्-शत् नमन करता हूँ।

-डा. अरविन्द जैन
A2/104 पेसेफिक ब्लू. होशंगाबाद रोड,
भोपाल (म.प्र.) मो. 9425006753

प्रकाशकीय

हमारे परम आराध्य गुरुवर आचार्य श्री निर्भयसागर जी महाराज विलक्षण प्रतिभा के धनी, हर क्षेत्र के ज्ञानी, निजानुभवी, उच्चकोटी के साधक, आगम ज्ञाता, साहित्यकार, दार्शनिक, तार्किक, अन्वेषक, चिंतक, कवि, वैज्ञानिक और अध्यात्म जगत् के पुरोधा हैं। जैसे वर्तमान के आचार्यों में सर्वोत्कृष्ट आगम ज्ञाता, निर्दोष चर्या और ख्याति प्राप्त परम पूज्य आचार्य गुरुवर श्री विद्यासागर जी एवं आचार्य श्री अभिनंदन सागर जी आचार्य श्री विपुल सागर जी हैं, वैसे ही पूज्य आचार्य श्री निर्भयसागर जी इस 21वीं सदी में जिन शासन और भारत देश के अनमोल रत्न हैं। आचार्य श्री अपने गुरु के प्रति जितने विनम्र, विनीत, समर्पित और आस्था से ओतप्रोत हैं उतने ही अपने शिष्यों एवं भक्तों के प्रति वात्सल्य, करुणा, दया और कल्याण की भावना से भरे हैं।

जैन धर्म के सिद्धांतों को वैज्ञानिक शैली में उदाहरण, तर्क, युक्ति और आगम प्रमाण देकर सभी मानवों को सर्वोत्कृष्ट ऊँचाई तक ले जाना चाहते हैं इसलिए परम पूज्य आचार्य श्री के उपदेश में तर्क, आगम और विज्ञान का पुट होता है। बच्चों के उत्थान और उज्जवल भविष्य के लिए सदा प्रयत्नशील रहते हैं। इसलिए प्रेरणा देकर गुरुदेव जगह-जगह पाठशालाएँ खुलवाते हैं। पूज्य आचार्य श्री छोटे-बड़े और गरीब-अमीर के भेदभाव से परे रहते हैं अपने संयम साधना के प्रति सदा सजग हैं। ऐसे महान गुरु की इस जीवन्त कृति के प्रकाशन का सौभाग्य जैन ब्रदर्स को प्राप्त हुआ है मैने भी इसके प्रकाशन में सहयोग किया। इसे हम अपना परम सौभाग्य मानते हैं। इसके संकलन का कार्य परम पूज्य मुनि श्री शिवदत्त सागर जी समाधिस्थ मुनिश्री हर्षदत्त सागर जी महाराज ने किया है उनके चरणों में नमोस्तु और प्रिंटिंग का कार्य जैन ब्रदर्स करोल बाग नई दिल्ली वालों ने किया है। उनके हम अभारी हैं।

प्रकाशक
सुनील जैन, जैन ब्रदर्स, नई दिल्ली,
डा. मिथलेश जैन तुलसीनगर, नागपुर

OK